प्रोफेसर आर.पी. व्यास स्मृति व्याख्यान

(राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस – 30वां अधिवेशन, 15–16 दिसम्बर, 2015)

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

इतिहासकार प्रो. आर.पी. व्यास एवं उनका इतिहास-लेखन

प्रो. शिव कुमार भनोत

इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के तत्वावधान में आयोज्य राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के 30वें अधिवेशन में देश भर से पधारे इतिहासकारों, शोधवेत्ताओं तथा शोधार्थियों; मंचासीन सम्माननीय लब्ध प्रतिष्ठजन; राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के समस्त ऑफिस–बियरर्स एवं एक्जीक्यूटिव के सम्मानित सदस्यगण तथा सदन में समुपस्थित विद्वान साथियों एवं जिज्ञासु सुधी श्रोताओं। मैं, सर्वप्रथम राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस ऑफिस बियरर्स एवं एक्जीक्यूटिव तथा विशेषत: इसके तेजस्वी एवं ऊर्जावान सैक्रेटरी प्रोफेसर एमेरिट्स प्रो. एस.पी. व्यास को अपने हृदय के गहन तल से साधूवाद देना चाहूंगा, उनका कोटिश: अभिनन्दन करना चाहूंगा जिन्होंने देश के चोटी के इतिहासज्ञ तथा राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति के प्राण पुरुष एवं राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के अग्रणी सूत्रधारों में से एक रहे स्व. प्रो. आर.पी. व्यास की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए उनकी पुनीत स्मृति में राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस अधिवेशनों में प्रो. आर.पी. व्यास स्मृति व्याख्यान–माला की शुरूआत की। मैं, राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की समस्त एक्जीक्यूटिव तथा प्रो. एस.पी. व्यास का अत्यन्त आभारी हूँ कि आपने मुझे इस अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं गरिमामय व्याख्यान–माला के प्रथम एवं संस्थापन व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया और आप महानुभावों से रुबरू होने का सुअवसर प्रदान किया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस व्याख्यान–माला के अंतर्गत होने वाले विद्वतापूर्ण व्याख्यानों से स्व. प्रो. व्यास के चरित्र, व्यक्तित्व, कृतित्व के मूल्यांकन व इतिहास जगत को उनके अप्रतिम योगदान पर टीका–टिप्पणी एवं

मीमांसा के समानांतर राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति विषयक शोध एवं अनुसंधान के नये आयाम प्रशस्त होंगे तथा ऐतिहासिक शोध जगत को एक नवीन दिशा मिलेगी। चूंकि आज का यह व्याख्यान इस शृंखला का प्रथम और संस्थापन व्याख्यान है इसलिए यह विचार बना कि इसे स्व. प्रो. आर.पी. व्यास और उनके इतिहास लेखन पर ही केन्द्रित किया जाए ताकि इसकी समीचीनता और प्रासंगिकता इस व्याख्यान–माला के शुभारम्भ से स्थापित हो सके और यह व्याख्यान इस शृंखला के भावी व्याख्यानों को एक दिशा प्रदान कर सके। अस्तु, मैंने अपने व्याख्यान को तीन भागों में विभक्त कर अपनी बात को आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है। प्रथम भाग जहाँ स्व. प्रो. आर.पी. व्यास के जीवन चरित्र एवं व्यक्तित्व पर केन्द्रित है वहीं द्वितीय भाग में उनके कृतित्व, इतिहास जगत को रहे उनके अवदान तथा उनके शोध अनुसंधान कर्म एवं लेखन यात्रा की शोधपरक मीमांसा की गयी है। तृतीय भाग में उनके सृजन, उनके इतिहास लेखन की समीक्षा तथा उनके इतिहास दर्शन के वैशिष्ट्यों की विवेचना एवं विश्लेषण करने का एक वस्तुपरक प्रयास किया गया है जिससे यह तथ्य मुखरित होकर सामने आता है कि प्रो. आर.पी. व्यास, शोधपरक मौलिक सोच और विचार रखने वाले एक पूर्वाग्रह मुक्त गम्भीर विश्लेषक, निष्पक्ष तथ्य गवेषक, दिशा प्रवर्तक और अप्रतिम इतिहासकार थे तथा राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति विषयक लेखन में उनका सर्वथा मौलिक एवं अविस्मरणीय योगदान रहा।

I

12 अगस्त, सन् 1922 को जोधपुर नगर के एक सुसंस्कारित, सम्भ्रान्त किन्तु पारम्परिक पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में स्व. आइदास एवं श्रीमती इन्दर कौर व्यास के तेजस्वी और स्वनामधन्य पुत्र के रूप में जन्मे स्व. राम प्रसाद जी की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा सुजानगढ़, रतनगढ़ में तथा उच्च शिक्षा जोधपुर नगर में सम्पन्न हुई थी। जसवन्त कॉलेज, जोधपुर से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्ति की यात्रा शुरूआत कर वे शैक्षिक क्षेत्र में एक के उपरान्त एक उपलब्धियां अर्जित करते चले गए और इतिहास विषय में अधिस्नातक कर उन्होंने कानून में एल.एल.बी. की उपाधि अर्जित की। अध्ययन पूर्ण करने के उपरान्त आपने राजपूत हाई स्कूल, चौपासनी में एक शिक्षक के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की। तदनन्तर, एक कॉलेज शिक्षक के रूप में आपने क्रमश: एस.एम.के. कॉलेज, जोधपुर; राजकीय महाविद्यालय डीडवाना एवं सरदारशहर में अध्यापन किया और सन् 1962 में जोधपुर में विश्वविद्यालय की संस्थापना के साथ ही विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एक शिक्षक के रूप में प्रविष्ट हुए और वहीं कार्यरत रहते

हुए एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) के रूप में 31 अगस्त, सन् 1982 को सेवानिवृत्त हुए।

अपने 32 वर्षों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के अध्यापन अनुभव तथा लगभग दो दशक से अधिक समयावधि के शोध कार्यानुभव से युक्त प्रो. आर.पी. व्यास अपने समग्र कैरियर के दौरान एक धीर-गम्भीर तथा परिश्रमी इतिहास शिक्षक के समानान्तर एक उत्कृष्ट शोधवेत्ता भी रहे। विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग को एक सशक्त एवं गरिमामय स्वरूप प्रदान करने में आपने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका निभाई और लगभग पाँच वर्षो तक विभागाध्यक्ष पद पर रहते हुए विश्वविद्यालय इतिहास विभाग को यथोचित ऊँचाई तक पहुँचाया। देश के ख्यातनाम इतिहासकारों यथा प्रो. बी.पी. सक्सेना, प्रो. दशरथ शर्मा, डॉ. के.एस. लाल के सान्निध्य में अध्यापन और अनुसंधान कर्मरत रहे प्रो. आर.पी. व्यास ने न केवल उनके साथ अपनी विद्वता और अकादमिक उत्कृष्टता को ही साझा किया वरन् एक सघन और चिरन्तन शोध यात्रा के मार्ग पर भी इस कदर अग्रसर हुए कि उन्होंने फिर कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान चीफ प्रोक्टर, छात्रसंघ परामर्शदाता, चीफ वार्डन, एन.सी.सी. ऑफीसर, स्पोर्ट्स इंचार्ज जैसे व्यस्ततायुक्त महत्त्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन पूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठता से करने के समानांतर इतिहास विषय के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कर्म से भी आप सदैव पूर्ण मनोयोग से गम्भीरतापूर्वक जुड़े रहे। प्रो. व्यास, जोधपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रथम पी-एच.डी. थे और उन्होंने प्रो. बी.पी.सक्सेना के मार्गदर्शन में **'रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800-1873 ए.डी.)'** विषय पर अपना यह शोध कार्य सम्पन्न किया था जो अपने आप में सर्वथा अनूठा और एक मानक शोध-कार्य था। सन् 1969 ई. में प्रकाशित हुए इस शोध-ग्रंथ के प्रकाशनार्थ विश्वविद्यालय के द्वारा प्रकाशन अनुदान भी प्रदान किया गया था। शोध कार्य तथा शोध कार्य मार्गदर्शन के प्रति रहे इनके रुझान और समर्पण भाव का अनुमान मात्र इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि इनके मार्गदर्शन में लगभग आधा दर्जन उत्कृष्ट पी-एच.डी. शोध कार्य सम्पन्न हुए थे।[1] ऐतिहासिक शोध एवं अनुसंधान कर्म के 'टॉर्च बियरर' रहे प्रो. व्यास जहाँ सन् 1967 में संस्थापित राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के संस्थापक सदस्य रहे वहीं बालिका शिक्षा एवं सामाजिक सरोकार के सशक्त पैरोकार के रूप में आप श्री जयनारायण व्यास शिक्षण संस्थान, जोधपुर तथा महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर के संस्थापक सदस्य रहे तथा इन भूमिकाओं का निर्वहन करते हुए वर्षो पूर्व आपने जो पौध लगाई थी और उन्हें निरन्तर सींचा था, आज वे वटवृक्ष का रूप धारण कर चुके हैं।

लगभग दस शोधपूर्ण कृतियों/ग्रंथों के प्रणयनकर्ता[2]; चार पाठ्यपुस्तकों के लेखक[3]; पत्र-पत्रिकाओं व जर्नल्स आदि में प्रकाशित शताधिक शोध-पत्रों/शोध-लेखों के शोधकर्ता-लेखक[4]; राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की छः प्रोसीडिंग्स एवं कतिपय अन्य प्रोसीडिंग्स के सम्पादनकर्ता; गजेटियर्स, डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी निर्माण में योगदान कर्ता[5]; अनेक पुस्तकों के रिव्यूज लेखक तथा समीक्षक[6]; प्राक्कथन लेखक; चैप्टर्स राइटर[7]; अनेक अध्यक्षीय/बीज भाषण/विस्तार व्याख्यानदाता[8] रह चुके प्रो. आर.पी. व्यास ने इण्डियन कौंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, नई दिल्ली तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा अधिस्वीकृत कतिपय प्रतिष्ठित रिसर्च प्रोजेक्ट्स पर भी कार्य किया था।[9] राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस (बीकानेर सैशन, सन् 1984) तथा उसके 25वें सिल्वर जुबली सेशन (जोधपुर सेशन, सन् 2009) के अध्यक्षीय उद्बोधन दे चुके प्रो. व्यास ने दर्जन भर प्रतिष्ठित व्याख्यान मालाओं के अंतर्गत देशभर में स्थान-स्थान पर अपने विद्वतापूर्ण भाषण दिए। पचास से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सेमीनार्स तथा कॉन्फ्रेन्स आदि में भाग लेकर वहाँ अपने शोध-पत्र प्रस्तुत कर चुके[10] तथा दर्जनों सेमीनार्स, संगोष्ठियों, कॉन्फ्रेन्स तथा अकादमिक कार्यक्रमों के आयोजक रह चुके प्रो. व्यास इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस; अमेरिकन हिस्ट्री कांग्रेस; इण्डियन हिस्टोरिकल रिकार्ड कमीशन; सेन्टर फॉर राजस्थान स्टडीज, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर; महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर; प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर; मेहरानगढ़ म्यूजियम एण्ड ट्रस्ट जोधपुर; इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता; शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर; गजेटियर डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर आदि संस्थाओं और उनके द्वारा समय-समय पर समायोजित अकादमिक एवं शोध सम्बन्धी कार्यक्रमों/प्रकाशन योजनाओं से अनेक दायित्वों सहित संलग्न और सम्बद्ध रहे।

इतिहास विषयक अपने उत्कृष्ट अनुसंधान/शोध कार्यो तथा लेखन एवं विविध अवदान के चलते प्रो. आर.पी. व्यास को जीवनपर्यन्त लगभग 12 सम्मान/पुरस्कार आदि प्राप्त हुए[11] जो इनके अप्रतिम योगदान एवं अवदान के साक्षात प्रमाण थे। सेवानिवृति के उपरान्त भी प्रो. व्यास की सतत् सक्रियता में कोई कमी नहीं आई तथा उन्होंने आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली तथा यू.जी.सी. के

महत्त्वपूर्ण रिसर्च प्रोजेक्ट्स पर कार्य किया, कतिपय शोधपूर्ण कृतियों का प्रणयन किया और लेखन व शोध कार्य के अलावा सामाजिक सरोकार के कार्यों में भी अपना भरपूर योगदान देते रहे तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में फैलो प्रोफेसर के रूप में जुड़े रहे। विशेषत: राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति पर केन्द्रित उनकी यह शोध कर्म एवं इतिहास लेखन यात्रा बिना थके निरन्तर और चिरन्तन तब तक चलती रही जब तक कि अपने जीवन के 91 बसन्त देखने के उपरान्त 25 जुलाई, 2013 को इस महान इतिहासकार की आत्मा परम तत्त्व में विलीन नहीं हो गई और काल के गाल पर अपने अविस्मरणीय योगदान की एक अमिट छाप छोड़ गई।

II

राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति विषयक उनके मौलिक शोध एवं अनुसंधान कर्म, इतिहास लेखन के क्षेत्र में उनके कृतित्व, योगदान तथा अवदान की समीक्षा, विवेचना एवं विश्लेषण अपने आप में एक समग्र तथा सांगोपांग विषय है जो अपने आप में जितना विशद् व वृहत है उतना ही गहन तथा गवेषणा प्रधान एवं शोधपरक भी। इस दृष्टि से विवेचना की दिशा में अग्रसर होते ही हमें उनके प्रथम और सर्वथा विरल एवं मौलिक शोध कार्य **'रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800-1873 ई.)'**[12] को उद्धृत करना होगा। इस शोध कार्य की समीक्षा एवं विवेचना हम इसी व्याख्यान के तृतीय भाग में करेंगे किन्तु यहाँ पर यह उल्लेख समीचीन होगा कि 1969 ई. में प्रकाशित यह शोध-ग्रंथ संस्थात्मक अध ययन की दृष्टि से राजस्थान के इतिहास विषयक अनुसंधान के क्षेत्र में एक नवाचार था, जिसका शोध जगत में सर्वत्र जोरदार स्वागत किया गया और शीघ्र ही मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर को इसे पुनर्मुद्रित करना पड़ा था। उल्लेखनीय है कि इस कृति के प्रकाशन के उपरान्त ही अगले वर्ष सन् 1970 में प्रो. व्यास का चयन जोधपुर विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर हुआ था। प्रो. व्यास द्वारा प्रणीत दूसरे मौलिक शोध ग्रंथ के रूप में **'महाराणा राजसिंह ऑफ मेवाड़'** को उद्धृत किया जा सकता है, जो सन् 1984 में प्रकाशित होकर शोध जगत के समक्ष आया। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा अपने स्नातकोत्तर सिलेबस में अनुशंसित किए गए इस ग्रंथ का रीप्रिंट उपलब्ध है और इसे अपने विषय का एक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। उपलब्ध मूल पुरालेखीय स्रोत-सामग्री आधारित शोध कार्य होने के कारण यह कृति अपना एक विशिष्ट महत्त्व रखती है। मेवाड़ के प्रारम्भिक इतिहास के प्रामाणिक अध्ययन तथा राजसिंह-औरंगजेब सम्बन्धों के गहन अध्ययन की दृष्टि

से इस कृति की महत्ता अपने आप में असमानांतर है। इस कृति में महाराणा-मुगल सम्बन्धों की समीक्षा जितनी गहनता से की गई है उतनी ही गम्भीरता से महाराणा और उनके उमराव वर्ग के पारस्परिक सम्बन्धों को भी विवेचित एवं विश्लेषित किया गया है। उन्होंने इस कृति में मेवाड़ की कला, संस्कृति तथा प्रशासनिक व्यवस्था पर जो कुछ लिखा है वह बहुत ही प्रामाणिक एवं उपयोगी बन पड़ा है।

राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर के द्वारा प्रकाशित एवं प्रो. आर.पी. व्यास प्रणीत **'आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास (1707 से 1950 ई.)'** दो खण्डों में, प्रो. व्यास द्वारा राजस्थान इतिहास लेखन को एक ऐसा अवदान है, जिसने उन्हें इस क्षेत्र में लेखन का एक अतुलनीय मुकाम प्रदान किया। इसका प्रथम खण्ड, **'आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास (1707-1818 ए.डी.)'** शीर्षक से सन् 1986 में प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय खण्ड, 'आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास (1818-1950 ए.डी.)' सन् 1995 ई. में प्रकाशित हुआ। राजस्थान के आधुनिक काल के इतिहास पर यद्यपि काफी शोध-कार्य हुए किन्तु उनका फलक इतना विशद् था और वे इतना बिखराव लिए हुए थी कि इस काल के एक ऐसे गुंथे हुए प्रामाणिक इतिहास लेखन की महती आवश्यकता बड़ी शिद्दत से महसूस की जाती रही थी जिसमें इन समस्त शोध कार्यों का समावेश प्राप्त मूल स्रोत-सामग्री के आधार पर यथोचित समीक्षा एवं विश्लेषण के साथ करते हुए उसे वस्तुपरक एवं समग्र ढंग से एक स्थान पर प्रस्तुत किया जा सके। प्रो. व्यास के इस कार्य ने इस आवश्यकता को वास्तविक अर्थ में पूर्णता ही प्रदान नहीं कि वरन् इस युग के राजस्थान के इतिहास की बड़ी ही गम्भीरता से महसूस की जा रही एक कमी को भी पूरा किया।

इन कृतियों के प्रणयन के अतिरिक्त प्रो. आर.पी. व्यास ने राजस्थान इतिहास के कतिपय चर्चित नायकों एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्यों के जीवन एवं उपलब्धियों पर भी अपनी इतिहास बोधयुक्त कलम चलाई जैसे - **समाज रत्न हरविलास सारदा**[13], **इन्द्रराज सिंघवी**[14], **राजस्थान के लोक नायक जयनारायण व्यास**[15], **महाराणा प्रताप**[16], **मथुरादास माथुर, द्वारकादास पुरोहित**[17] आदि। यह कहना न तो कोई अतिशयोक्ति होगी और न ही अतिरंजना कि इन इतिहास पुरुषों के व्यक्तित्व, चरित्र तथा कृतित्व का मूल्यांकन तथा विश्लेषण करते समय प्रो. व्यास ने एक निष्पक्ष, पूर्वाग्रह रहित सापेक्ष इतिहासकार की भूमिका का निर्वहन किया। उन्होंने अपने शिष्य मांगीलाल मयंक का असामयिक निधन हो जाने पर उनके द्वारा प्रणीत किन्तु अधूरे रह गये ग्रंथ 'हिस्ट्री ऑफ जैसलमेर' के तीन अध्याय लिख कर उस कृति को जिस रूप में पूर्णता प्रदान की वह उसे

इतिहास लेखन की कसौटी पर खरा प्रमाणित कर पाई।[18] राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की छः प्रोसीडिंग्स का जिस परिश्रम और इतिहास-बोधयुक्त दृष्टि से उन्होंने सम्पादन किया वह उनकी उत्कृष्ट सम्पादकीय क्षमता का अहसास कराता एक ज्वलंत उदाहरण था। उन्होंने, **'ब्रिटिश पॉलिसी टूवर्ड्स प्रिंसली स्टेट्स ऑफ इण्डिया'** शीर्षक से एक अन्य पुस्तक का भी सम्पादन किया था।[19] यह एक सेमीनार प्रोसीडिंग थी जिसकी सम्पादकीय उत्कृष्टता एवं गुणवत्ता इसके उद्धृत किए जाने योग्य वैशिष्ट्य हैं। आधुनिक राजस्थान के इतिहास के विविध पक्षों पर उन्होंने अनेक शोध पत्र लिखे जो यत्र-तत्र प्रकाशित हुए और इतिहास जगत में व्यापक चर्चा के केन्द्र बिन्दु बने। उन्होंने गजेटियर ऑफ इण्डिया-जोधपुर डिस्ट्रिक्ट में अपने तथ्यपरक एवं गवेषणाप्रधान अध्याय लेखन; डिक्शनरी ऑफ नेशनल बॉयग्राफी को तैयार करने में अपने लेखकीय योगदान; विविध पुस्तकों के रिव्यू लेखन; अनेक कृतियों के प्राक्कथन लेखन; राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के अध्यक्षीय उद्बोधन लेखन तथा इतिहास प्रदीप, भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास, विश्व का इतिहास तथा भारतीय इतिहास की रूपरेखा शीर्षकों से लिखी पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से न केवल प्रादेशिक वरन् राष्ट्रीय इतिहास जगत को बारम्बार गौरवान्वित होने के अवसर प्रदान किए थे।

सन् 1967 में संस्थापित राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के संस्थापक सदस्य; इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता के जोधपुर में सन् 1970 में सम्पन्न आठवें अधिवेशन के आयोजन सचिव; सन् 1967 से 1970 तक राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के सह सचिव एवं तदनन्तर सन् 1970 से 1976 तक सचिव; सन् 1969 से 1980 तक राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य; सन् 1984 में बीकानेर में सम्पन्न हुए राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के चौदहवें अधिवेशन के अध्यक्ष; सन् 2009 में महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर में सम्पन्न हुए राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष; सन् 1966 से 1980 तक इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस के सदस्य; सन् 1970 से 1984 तक इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता के सदस्य एवं सन् 1979 से 1985 तक रहे इसके कार्यकारिणी सदस्य; शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर द्वारा प्रकाशित राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति विषयक रिसर्च जर्नल 'परम्परा' के परामर्शदाता मण्डल के सदस्य; राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास लेखन हेतु गठित हुई परामर्शदात्री समिति के सदस्य; इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा सन् 1976-79 में तैयार कराई गई पुस्तक 'रीडिंग इन इण्डियन हिस्ट्री' के सम्पादक मण्डल सदस्य; महाराजा गंगासिंह शताब्दी ग्रंथ

के संपादक मण्डल सदस्य; लगभग दस वर्षों तक राजस्थान सरकार के गजेटियर विभाग के परामर्शदाता मण्डल सदस्य; तीन वर्ष तक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी सदस्य; जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर तथा डूंगर स्वायत्तशासी महाविद्यालय, बीकानेर के पाठ्यक्रम मण्डलों के सदस्य; जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के संकाय सदस्य; राजस्थान सरकार की राजस्थान गजेटियर्स प्रकाशन शाखा के ग्रुप कमेटी सदस्य; महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश रिसर्च सेंटर, मेहरानगढ़ के परामर्शदाता मण्डल सदस्य तथा जोधपुर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम मण्डल सदस्य, संयोजक, अकादमिक परिषद सदस्य, सीनेट सदस्य, लाईब्रेरी बोर्ड सदस्य, स्पोर्ट्स बोर्ड सदस्य आदि अनेकानेक शैक्षिक, अकादमिक सम्बद्धताओं से सतत् रूप से आबद्ध और संलग्न रहे प्रो. व्यास ने तत्सम्बन्धी प्रत्येक दायित्व को अत्यन्त गम्भीरता एवं कर्त्तव्यनिष्ठता से सम्पादित किया तथा एक प्रखर इतिहासकार के सोच और कार्यशैली की अमिट छाप उन्होंने अपने द्वारा सम्पादित तत्सम्बन्धी प्रत्येक कार्य पर छोड़ी। उनके प्रशासनिक कार्यानुभव और सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्यों, कृतित्व और अवदान का फलक भी अपने आप में बड़ा व्यापक रहा था किन्तु यहाँ पर एतद्विषयक चर्चा को समाविष्ट नहीं किया जा रहा है।

प्रो. व्यास, डिंगल तथा राजस्थानी के भी मर्मज्ञ विद्वान थे। अपने डिंगल ज्ञान का उपयोग उन्होंने राजस्थान के इतिहास और संस्कृति विषयक शोधपूर्ण लेखन के समय एतद्विषयक डिंगल में लिखी ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों, साहित्य के अध्ययन एवं मूल पुरालेखीय स्रोत-सामग्री का उपयोग करते समय बड़े ही मुक्त हस्त से किया। यही नहीं उन्होंने **'गिररी गौरव'** तथा **'जैता-कूंपा सतसई'** जैसी डिंगल काव्य कृतियों तथा मारवाड़ के अभिलेख (दो भागों में) का प्रणयन कर अपने डिंगल ज्ञान को भी भलीभांति प्रमाणित करते हुए इस दृष्टि से भी अपनी एक पहचान कायम की।

III

इतिहासकार स्व. प्रो. आर.पी. व्यास के ऐतिहासिक शोध कर्म तथा इतिहास-लेखन का फलक निश्चिततः काफी विशद् और बहुआयामी रहा परन्तु उन्होंने इसे मुख्यतः राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति पर ही केन्द्रित रखा। इस फलक पर कार्य करते समय उन्होंने कई प्रबन्ध लिखे, शोधपूर्ण कृतियों का प्रणयन किया एवं चर्चा का विषय बने उनके अनेक शोध-पत्र प्रकाशित हुए। अपने इस सृजन में उन्होंने एक स्वतंत्र तथा पृथक्क इतिहास लेखन शैली का

प्रणयन कर विरल एवं मार्ग प्रशस्तक इतिहासकार के रूप में अपनी एक विशिष्ट छवि कायम कर पाने में सफलता प्राप्त की। एतद्विषयक विवेचना एवं विश्लेषण की दृष्टि से जब हम उनके ऐतिहासिक अवदान पर गौर करते हैं तो हमारी दृष्टि सर्वप्रथम उनके द्वारा लिखित उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति **'रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800-1873 ई.)'** पर केन्द्रित होती है। वस्तुत: यह उनका पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध था जिसे यथोचित परिष्कार एवं परिमार्जन के उपरान्त जुलाई, सन् 1969 ई. में प्रथमत: दिल्ली से प्रकाशित किया गया था। आठ अध्यायों में विभक्त अपनी इस शोध-कृति में प्रो. व्यास ने उक्त समयावधि के दौरान मारवाड़ में उमराव-वर्ग को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और कई अर्थों में निर्णायक रही एक प्रभावी संस्था के रूप में विवेचित और विश्लेषित करते हुए उसका समग्र एवं शोधपरक चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया था। उनके इस प्रबन्ध को ध्यानपूर्वक देखा जाए तो यह तथ्य मुखरित होकर सामने आता है कि मारवाड़ में उमराव-वर्ग को एक संस्था के रूप में अध्ययन करने की दृष्टि से उनका यह कार्य एक ऐसा प्रारम्भिक और बुनियादी कार्य था[20] जिसमें उमराव-वर्ग के अभ्युदय, विकास तथा उसके सम्प्रभु सत्ता से रहे सम्बन्धों के विविध आयामों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक सर्वथा नूतन दृष्टि से विवेचित एवं विश्लेषित किया गया था। यह कहना न तो कोई अतिश्योक्ति होगा और न ही अतिरंजना की मारवाड़ के समसामयिक जीवन तथा राजनीति को जितना इस संस्था ने प्रभावित किया उतना उसे और कोई संस्था प्रभावित नहीं कर पाई थी।

'मारवाड़ का इतिहास इसके उमराव-वर्ग का इतिहास है', उक्ति या अवधारणा के संस्थापनकर्ता एवं प्रबल पृष्ठपोषक रहे प्रो. व्यास ने प्रारम्भिक दौर में उमराव-वर्ग को मारवाड़ का वास्तविक निर्माता साबित करने का प्रयास किया है, और इस प्रयास में वे काफी हद तक सफल भी रहे हैं। तब शासक तो नाममात्र के लिए प्रधान थे जबकि वास्तव में अहम् भूमिका का निर्वहन यह उमराव वर्ग ही करता था। राज्य के आंतरिक और बाह्य सभी मामलों को परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से प्रभावित करने में सक्षम इस वर्ग की भूमिका बड़ी ही व्यापक, गहन और निर्णायक थी और वह स्वयं को सत्ता में भागीदार समझता था। यद्यपि, मारवाड़ पर मुगल आधिपत्य कायम होने से परिदृश्य में बदलाव आया तथा शासक-उमराव वर्ग के पारस्परिक सम्बन्ध, स्वामी-सेवक संबंधों में तब्दील होते हुए दिखाई दिए। यद्यपि, मुगल सर्वोच्च सत्ता के पतन से इस उमराव वर्ग का हौसला फिर से बढ़ता हुआ दृष्टिगत हुआ और इसने पुन: अपना सिर उठाना शुरू कर दिया और अपने ही शासक के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण रुख दर्शाना प्रारम्भ कर दिया। उनकी महत्त्वाकांक्षाएं

बढ़ी और कभी-कभी तो वे अनियंत्रित होते हुए दृष्टिगत हुए। प्रो. व्यास ने अपने इस प्रबन्ध में मारवाड़ राज्य में घटित हो रहे इस नवीन विकास क्रम को पोकरन ठाकुर सवाई सिंह व कतिपय अन्य उमरावजनों के उदाहरण देते हुए बहुत ही अच्छे ढंग से विश्लेषित किया है। अपने अध्ययन में प्रो. व्यास इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उमरावों की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता, ईर्ष्या एवं वैमनस्य ने मारवाड़ में अशांति एवं विक्षोभ की स्थिति उत्पन्न कर दी। अशांति के इस दौर में राजनीतिक दृष्टि से अलग-थलग पड़ गए, आर्थिक दृष्टि से विपन्न तथा मानसिक रूप से अस्तव्यस्त इन उमरावों ने या तो अपने आप को बहुधा अपनी जागीरों तक ही सीमित कर लिया या निर्वासन जीवन जीते हुए यदा-कदा पोलिटीकल एजेन्ट को अपने शासक के विरुद्ध शिकायतें करने और वहाँ से कोई अपेक्षित या अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर स्वच्छन्द लुटेरों, डकैतों का जीवन जीते हुए अपने ही राज्य को तबाह करने के मार्ग पर चलने की राह पकड़ ली। लम्बे समय तक चले टकराव के इस विकास क्रम की सम्पुष्टि महाराजा मानसिंह तथा उनके उमरावों के मध्य चले लम्बे संघर्ष से होती है। महाराजा मानसिंह के समय में नाथों ने समस्या को और अधिक जटिल बना दिया। नाथों के मध्य चल रही आंतरिक प्रतिस्पर्द्धा ने समस्या को और गहन कर दिया जिसने अंततोगत्वा ब्रिटिश गवर्नमेंट को मारवाड़ की राजनीति में दखल करने का मौका प्रदान कर दिया। इसी क्रम में प्रो. व्यास ने मारवाड़ के प्रशासन, विधि एवं व्यवस्था की स्थिति पर पड़े ब्रिटिश मर्यादित व सकारात्मक प्रभाव को भी भलीभांति विवेचित किया है।

प्रो. व्यास ने अपने इस प्रबन्ध में महाराजा मानसिंह के उपरान्त मारवाड़ के शासक बने महाराजा तखत सिंह के युग को भी इस परिप्रेक्ष्य में विवेचित और विश्लेषित किया है। प्रो. व्यास ने लिखा है कि महाराजा तखत सिंह ने मारवाड़ के उमरावों की जागीरों के गाँवों को जब्त किया; उन पर रेख, हुक्मनामा, न्यौता आदि लागों का बोझ बढ़ा दिया तथा उन्हें राज्य शासन-प्रबन्ध में उपेक्षित रखा एवं राज्य के महत्त्वपूर्ण पदों पर गुजरातियों की नियुक्तियां की। इससे मारवाड़ के उमरावों में असंतोष एवं विक्षोभ पैदा हुआ। इससे पूर्व की ब्रिटिश हुकूमत वहाँ कुछ हस्तक्षेप करती वहाँ पर सन् 1857 के विद्रोह की चिनगारी सुलग उठी। आउवा, आसोप, गूलर, आलनियावास आदि ठिकानों के उमराव अंग्रेजों के समर्थन में खड़े दरबार ट्रुप्स का विरोध करने के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। वे जोधपुर-लीजियन से मिल गए जो ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ लड़ रही थी। महाराजा ने विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों की बड़ी ही ईमानदारी से मदद की। इसी की आड़ में महाराजा ने स्थिति का लाभ उठाते हुए कतिपय असंतुष्ट सरदारों

से अपने बदले भी ले लिए। तदनन्तर, कुछ समय तक शांति अवश्य बनी रही परन्तु, दोनों पक्षों के मध्य पारस्परिक कड़वाहट अविश्वास और संदेह बने रहे। अपने इस प्रबन्ध में प्रो. व्यास ने 1857 के विद्रोह के उपरान्त के मारवाड़-युग को भी इस परिप्रेक्ष्य में विवेचित एवं विश्लेषित किया है जबकि मारवाड़ की प्रशासनिक जरूरतों और उमरावों से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए ब्रिटिश हस्तक्षेप जरूरी सा हो गया था। महाराजा तखत सिंह की मृत्यु के उपरांत महाराजा जसवन्त सिंह-II मारवाड़ के शासक बने। यह वह दौर था जबकि महाराजा तथा उमरावों के मध्य लम्बित चले आ रहे कई मामलों का निस्तारण किया गया। इस क्रम में आसोप, आलनियावास, गूलर तथा बीजावास के ठाकुरों और महाराजा के मध्य चले आ रहे विवादों को सुलझाया गया। प्रो. व्यास ने अपनी इस कृति में अमीरों के साथ हुई लड़ाइयों, उन्हें प्रदत्त सुविधाओं एवं विशेषाधिकारों, मान-सम्मान आदि के साथ ही साथ उनके विविध दायित्वों एवं कर्त्तव्यों के विषय में भी विस्तार से लिखा है। उन्होंने उमरावों की विविध श्रेणियों का उल्लेख किया है जैसे-राजवी, वंशानुगत उमराव और मुत्सद्दी या अधिकारी वर्ग। राजवियों को उन्होंने फिर से सिरायतों, गिनायतों में विभक्त किया है। उन्होंने उमरावों का वरीयता क्रम या अग्रता-क्रम बताने के साथ ही साथ दरबार में संधारित या अनुपालित की जाने वाली कतिपय रीतियों-परम्पराओं आदि की भी विवेचना की है। प्रो. व्यास ने मारवाड़ के उमरावों की अपनी स्वयं की जागीरों में रही प्रशासनिक, सैन्य और कार्यकारी स्थिति; उनके द्वारा वहाँ पर प्रयुक्त किए जाने वाले तत्सम्बन्धी अधिकार, शक्तियां एवं विशेषाधिकार तथा अपनी रैयत से वसूली जाने वाली लाग-बागों का खुलासा चित्रण भी अपनी इस कृति में किया है। ऐसा करते समय उन्होंने मारवाड़ के उमरावों के योगदान पर भी लिखा है और उसके प्रति उपेक्षा का रुख कदापि नहीं दर्शाया है। कृति के अंत में दिए गए चार परिशिष्ट एवं उनमें समाहित ब्यौरा भी बहुत ही उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

यहाँ यह तथ्य विशेषत: उद्धृत किए जाने योग्य है कि मारवाड़ के पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों यथा वी.एन. रेउ, जे.सी.गेहलोत, जी.एच. ओझा तथा आर.के. आसोपा आदि[21] ने मारवाड़ के इतिहास को जहाँ मात्र शासक की दृष्टि से ही लिखने का प्रयास किया तथा उमराव वर्ग जैसे महत्त्वपूर्ण वर्ग के प्रति उपेक्षा का भाव दर्शाया वहीं प्रो. व्यास ने अपनी इस कृति में पूर्णत: निष्पक्ष रहते हुए शासक, शासित और मध्यस्थ तीनों ही वर्गों को अपने इतिहास लेखन के केन्द्र में रखते हुए सम्यक और समग्र दृष्टि से तथ्यों पर आधारित मारवाड़ के उमराव वर्ग के विशेष संदर्भ में मारवाड़ का एक वस्तुपरक एवं यथार्थ इतिहास लिखने का

सराहनीय कार्य किया। उनके इस कार्य से राजस्थान के विविध राजे-रजवाड़ों के उमराव-वर्ग सम्बन्धी शोधपरक अध्ययनों का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसे उनके एक अन्य योगदान के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। मूल एवं प्राथमिक स्रोत-सामग्री आधारित समृद्ध संदर्भों से युक्त प्रो. व्यास की यह कृति न केवल मारवाड़ वरन् समूचे राजस्थान में उमराव-वर्ग को एक संस्था के रूप में समझने और निष्कर्षों तक पहुँच पाने में सहायता करने वाली एक मार्ग प्रशस्तक शोध-कृति प्रमाणित हुई है। यह कहना निश्चिततः संदेह से परे होगा कि तथ्यों, सूचनाओं और जानकारियों के जंगल में से सही तथ्यों का चुनाव कर, उनके मंथन, टीका-टिप्पणी और मीमांसा उपरान्त सृजित उनकी यह कृति अपने विषय में एक 'मील का पत्थर' साबित हुई। उनकी इस शोध कृति का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि उन्होंने अपने इस कृति प्रणयन में नेशनल आर्काईव्ज, नई दिल्ली; राजस्थान स्टेट आर्काईव्ज, बीकानेर तथा अन्यत्र उपलब्ध समसामयिक बहियों, पत्रावलियों, पत्रों, दस्तावेजों एवं पाण्डुलिपियों आदि मूल पुरालेखीय स्रोतों को ही मुख्यत: आधार स्रोत-सामग्री के रूप में प्रयोग किया है। उन्होंने यथासम्भव किसी भी द्वितीयक स्रोत को प्राथमिक या समसामयिक स्रोत की तुलना में अधिक महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने ख्यातों तथा ऐतिहासिक साहित्य का प्रयोग करते समय भी बेहद सतर्कता और सावधानी बरती है। उनके द्वारा उमरावों तथा ठिकानों आदि से सम्बन्धित मूल पत्रों तथा खास-रुक्कों आदि को तलाश कर उन्हें अपने इस शोध-कृति के प्रणयन कार्य में प्रयुक्त करने से इस कार्य की महत्ता और अधिक बढ़ गई है तथा इनसे उमराव वर्ग की कतिपय ऐसी गतिविधियों को प्रकाश में लाने में सहायता मिली है जो अन्यथा ज्ञात नहीं होती हैं। प्रो. व्यास की इस कृति के अवलोकन एवं अध्ययन से कर्नल टॉड की 'एनल्स' में लिखी मारवाड़ विषयक कई बातें प्रश्नचिह्न के घेरे में आ जाती हैं या गलत साबित हो जाती हैं जो कि स्वयं एक समकालीन लेखक था और जो व्यक्तिश: मानसिंह के समय में मारवाड़ आया था। उन्होंने जो कुछ लिखा उसका आधार एकांगी स्रोत नहीं हैं। उन्होंने अपनी हर बात को अन्य स्रोतों में प्राप्त ब्यौरे या जानकारी से सम्पुष्ट किया है जिससे उनके कथन की प्रामाणिकता बढ़ी है। मूल स्रोत-सामग्री के संकलन के लिए उन्होंने मारवाड़ के विविध ठिकानों जैसे खेजड़ला, पोकरण, भाद्राजण, नीमाज, मालानी आदि की निज यात्राएँ की और बड़े ही परिश्रम और प्रयत्नपूर्वक वहाँ से मूल्यवान स्रोत-सामग्री एकत्रित कर उसे अपने ग्रंथ प्रणयन में मुक्त हस्त से प्रयोग किया। मारवाड़ के उमराव वर्ग पर लिखते समय प्रो. व्यास ने अपनी उक्त कृति में जहाँ बेशुमार सर्वथा नूतन तथ्य, सूचनाएं और जानकारियां समाहित

की हैं वहीं पूर्व लेखकों के द्वारा लिखी गई एतद्‌विषयक कई बातों, अवधारणाओं और निष्कर्षों की पुनर्विवेचना करते हुए उन्हें सर्वथा नए अर्थों में परिभाषित किया।

सन् 1984 ई. में प्रकाशित होकर सामने आई प्रो. आर.पी. व्यास कृत **'महाराणा राज सिंह ऑफ मेवाड़'** उनकी एक ऐसी कृति थी जिसमें उन्होंने मूल स्रोत सामग्री को आधार बना कर मेवाड़ के प्रारम्भिक इतिहास, महाराणा-मुगल सम्बन्ध तथा महाराणा-उमराव वर्ग सम्बन्धों को समालोचनात्मक दृष्टि से विवेचित और विश्लेषित किया था तथा समसामयिक मेवाड़ की कला, संस्कृति एवं प्रशासनिक व्यवस्था को भी उजागर किया। स्व. प्रो. आर.पी. व्यास प्रणीत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इतिहास-लेखन क्रम में राजस्थान के आधुनिक काल पर केन्द्रित उनकी दो वोल्यूम्स का उल्लेख यहाँ पर अपरिहार्य होगा जो **'आधुनिक राजस्थान का वृहत्त इतिहास (1707 से 1818 ए.डी.)'** तथा **'आधुनिक राजस्थान का वृहत्त इतिहास (1818 से 1950 ए.डी.)'** शीर्षक से हैं तथा जिन्हें राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर द्वारा क्रमशः सन् 1986 तथा सन् 1995 में प्रकाशित किया गया था। चूंकि यह कालावधि और इसका फलक अपने आप में बेहद व्यापक है और इस अवधि के राजस्थान पर लिखने वाले इतिहासकार के लिए राजस्थान के कई राज्यों तथा उनसे जुड़े बहुआयामी विषयों को अपने लेखन में समाहित करना एक प्राथमिक अनिवार्यता है अतः तत्सम्बन्धी इतिहास लेखन का कार्य एक जबर्दस्त चुनौती से कम नहीं था। परन्तु प्रो. व्यास ने न केवल इस चुनौती को स्वीकार ही किया वरन् इन दो वोल्यूम्स के माध्यम से वास्तविक अर्थों में आधुनिक राजस्थान का एक वृहत्त, समग्र तथा शोधपरक इतिहास लिख कर स्वयं को इस कसौटी पर खरा उतरा प्रमाणित भी किया। यह वह समयावधि थी जिस दौरान राजस्थान को कई महत्त्वपूर्ण सोपानों से होकर गुजरना पड़ा था। इस दौरान राजस्थान को मुगलों, मरहठों एवं पिण्डारियों और अन्ततः ब्रिटिशर्स के सम्पर्क में आना पड़ा था। प्रो. व्यास ने इस दौर का प्रामाणिक इतिहास बहुत ही तथ्यात्मक, शोधपरक, रोचक एवं पठनीय शैली में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने समसामयिक राजस्थान और उसकी पूर्ववर्ती रियासतों में हुए कृषक आंदोलनों, आदिवासी आंदोलनों और प्रजामण्डल आंदोलनों पर भी खूब विस्तार से लिखा है तथा कतिपय नवीन तथ्यों को उद्‌घाटित किया है। इस युग के इतिहास लेखन की सबसे बड़ी चुनौती यह रही है कि इस समय की स्रोत-सामग्री प्रचुरता में समुपलब्ध है तथा इस समय के इतिहास प्रणयन क्रम में विविध आयामों पर पृथक्क-पृथक्क कई शोधपूर्ण कार्य भी हुए, जिनमें से कई वास्तविक अर्थों में

प्रकाश में भी नहीं आ पाए थे। ऐसे शोध कार्यों को यथोचित समीक्षा उपरान्त अपने लेखन में समाहित करना; तथ्यों, जानकारियों से युक्त विपुल स्रोत-सामग्री के जंगल में से अधिक उपयुक्त, सही व प्रामाणिक संदर्भों का चयन करना एवं उन्हें अपनी निष्पक्ष इतिहासकार दृष्टि से विवेचित और विश्लेषित करना तथा उसे एक गुथे हुए स्वरूप में प्रस्तुत करना कोई सामान्य कार्य नहीं था किन्तु, प्रो. व्यास इस कसौटी पर भी खरे उतरे। उन्होंने बड़े ही परिश्रम पूर्वक इस सामग्री का मंथन और विश्लेषण कर उसे इस क्षेत्र में हुए नवीन शोध कार्यों की विवेचना तथा पुनर्विवेचना से जोड़ते हुए बहुत ही सटीक ढंग से आधुनिक राजस्थान के इतिहास को इन वोल्यूम्स के माध्यम से हमारे समक्ष रखा है।

उपर्युक्त कृतियों के प्रणयन के अतिरिक्त प्रो. व्यास ने राजस्थान के कतिपय चर्चित एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन और योगदान पर भी अपनी लेखनी को केन्द्रित किया। इस दृष्टि से हम उनके द्वारा प्रणीत कृतियों - **राजस्थानरा इतिहास रतन-इन्द्रराज सिंघवी; राजस्थान के लोकनायक जयनारायण व्यास; महाराणा प्रताप** तथा **समाज रत्न हरविलास सारदा** को विशेष रूप से उद्धृत कर सकते हैं जिनके माध्यम से उन्होंने इन शख्सियतों के व्यक्तित्व, कृतित्व, चरित्र तथा योगदान का एक ऐतिहासिक दृष्टियुक्त शोधपरक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। राजस्थानी भाषा में भी इतिहास लेखन की प्रो. व्यास की अद्‌भुत क्षमता और योग्यता को प्रमाणित करती उनकी कृति **'राजस्थान रा इतिहास रतन-इन्द्रराज सिंघवी'**, महाराजा मानसिंह के महत्त्वपूर्ण दीवान रहे इन्द्राज सिंघवी के प्रशासनिक तथा वीरतापूर्ण कार्यों का एक विशद् तथा सही लेखा जोखा है, जिसे उन्होंने ऐतिहासिक शोधपरक शैली से लिखा है। उनकी कृति **'राजस्थान के लोकनायक जयनारायण व्यास'** में प्रो. व्यास ने जयनारायण व्यास से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं एवं विकास क्रम को संयोजित एवं विश्लेषित करते हुए उन्हें परस्पर इस प्रकार गूंथा है कि उनकी यह कृति एक रोचक तथ्यात्मक उपन्यास की तरह पठनीय बन पड़ी है और एक सफल राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक के रूप में जयनारायण व्यास की छवि को भलीभांति स्थापित कर पाने में सफल सिद्ध हुई है। **'महाराणा प्रताप'** शीर्षक से लिखी गई प्रो. व्यास की अन्य कृति राजपूत गौरव को रेखांकित करती उनकी एक ऐसी कृति है, जिसमें उन्होंने पूर्ववर्ती तथा बाद के इतिहासकारों द्वारा उत्पन्न ऐसी कई भ्रांतियों का खण्डन तथा निराकरण किया है जो हल्दीघाटी के युद्ध के पूर्व के तथा बाद के प्रताप-अकबर सम्बन्धों को लेकर गढ़ी गई थीं। **'समाज रत्न हर विलास सारदा'** शीर्षक से लिखी प्रो. व्यास की एक अन्य कृति इस दीवान बहादुर के

द्वारा एक उत्कृष्ट लेखक, पत्रकार तथा समाज सुधारात्मक लेखक के रूप में प्रदत्त मूल्यवान योगदान को रेखांकित करती है। प्रो. व्यास ने '**ब्रिटिश पॉलिसी टूवर्ड्स प्रिन्सली स्टेट्स ऑफ इण्डिया**' शीर्षक से एक कृति का सफल सम्पादन भी किया, जो कि एक सेमीनार प्रोसीडिंग्स थी और जो उनकी सम्पादकीय योग्यता के एक विशिष्ट उदाहरण के रूप में उद्धृत की जा सकती है। इसके अतिरिक्त प्रो. व्यास ने शताधिक शोध-पत्र लिखे जो एक इतिहासकार के रूप में उनकी उसी तथ्यपरक, गवेषणात्मक एवं निष्पक्ष इतिहास लेखन शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसकी झलक हमें उनकी उन कृतियों में स्पष्टत: देखने को मिलती है, जिनकी चर्चा हम पूर्व में कर चुके हैं।

जहाँ तक प्रोफेसर व्यास की इतिहास दृष्टि एवं उनके इतिहास-दर्शन का प्रश्न है उन्होंने अपने इतिहास लेखन में सदैव तथ्यों के निरूपण और तटस्थ रहते हुए उनके निष्पक्ष विवेचन और विश्लेषण पर बल दिया। उनका मानना था कि तथ्यों और इतिहास स्रोतों को खोजना, उन्हें प्रकाश में लाना तथा उन्हें उनके स्वाभाविक अर्थो में बुलवाना ही वास्तविक इतिहास प्रणयन है। इस रूप में उन्होंने प्रख्यात इतिहासकार **ई.एच. कार** की इस बात का पुरजोर समर्थन करते हुए उसे और आगे बढ़ाने का कार्य किया कि, ''इतिहास तथ्यों से बनता है और तथ्य गूंगे होते हैं, जिन्हें बुलवाने का काम एक इतिहासकार करता है।" उन्होंने तथ्यों के चयन को बहुत ही महत्त्वपूर्ण और निर्णायक घटक माना चूंकि सही इतिहास का निर्माण तभी सम्भव है जबकि तथ्यों, जानकारियों और सूचनाओं के जंगल में से प्रामाणिक, सही और उपयुक्त तथ्यों का चयन कर उन्हें इतिहास सृजन के लिए प्रयुक्त किया जाए। उन्होंने इतिहास-लेखन में मूल स्रोत-सामग्री के रूप में समसामयिक स्रोतों को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया और उनकी विश्वसनीयता को सर्वाधिक प्रामाणिक माना। उनका मानना था कि किसी प्राथमिक या समसामयिक स्रोत में कही गई बात की सम्पुष्टि किसी अन्य स्रोत से करना आवश्यक है। अपनी कृतियों का प्रणयन करते समय उन्होंने इस बात को मूल मन्त्र की तरह अपने इतिहास-लेखन में आत्मसात किया। उनकी यह स्पष्ट धारणा थी कि द्वितीयक स्रोतों में समाहित बात को सदैव प्राथमिक या समसामयिक स्रोतों की तुलना में दोयम दर्जे पर ही रखा जाना चाहिए। उनका मानना था कि राष्ट्रीय अभिलेखागार, राज्य अभिलेखागार और स्थापित अभिलेख संग्रहालयों या शोध केन्द्रों में संग्रहीत एवं सुरक्षित मूल पुरालेखीय स्रोत-सामग्री एवं आधार-सामग्री से इतर भी मूल्यवान जानकारियों से युक्त ऐसी बहुत सी स्रोत-सामग्री है जो यत्र-तत्र बिखरी पड़ी है और अभी तक प्रकाश में नही लाई जा सकी है। ऐसी

सामग्री को ढूंढ कर खोज निकालना और उसे अपने इतिहास लेखन में प्रयुक्त करना विषय की समृद्धि के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने जब '**नोबिलिटी इन मारवाड़**' पर कार्य किया तो इसी दृष्टि को केन्द्र में रखते हुए स्थान-स्थान पर जाकर विविध घरानों और ठिकानों की यात्राएँ कीं तथा वहाँ पर पड़ी अनछुई स्रोत-सामग्री को अपने इतिहास-लेखन में मुक्तहस्त से प्रयोग किया। प्रो. व्यास ने अपने इतिहास लेखन में ख्यातों तथा ऐतिहासिक-साहित्य का भी खुल कर प्रयोग किया परन्तु ऐसा करते समय और विशेष कर ऐतिहासिक साहित्य को स्रोतों के रूप में प्रयोग करते समय उन्होंने बहुत ही सतर्कता और सावधानी बरतने का परामर्श दिया तथा अतिशयोक्ति एवं अतिरंजना से बचने की पुरजोर वकालत की।

पूर्ववर्ती इतिहासकारों द्वारा व्यक्त मान्यताओं और धारणाओं को ससंदर्भ उद्धृत किए जाने में संकोच नहीं करने वाले प्रो. व्यास के लेखन का एक वैशिष्ट्य यह रहा कि उन्होंने कभी भी पूर्ववर्ती इतिहासज्ञों की लिखी बातों पर आंख मूंद कर विश्वास नहीं किया वरन् उन्हें तथ्यों की कसौटी पर कस कर और उस कसौटी पर पूर्णत: खरा उतरने पर ही स्वीकार किया। जहाँ कहीं उन्हें पूर्ववर्ती लेखकों की बातें भ्रांतिपूर्ण या गलत लगीं वहीं उन्होंने बेखौफ होकर उनका खण्डन किया, भ्रांतियों का निराकरण किया और अपने मत के समर्थन में तर्क भी प्रस्तुत किए। चाहे टॉड का एनल्स में वर्णित मारवाड़ विषयक वृतान्त हो या अन्य इतिहासकारों द्वारा वर्णित इतर बातें, प्रो. व्यास की लेखनी ने ऐसी किसी भी त्रुटि, विकृति या विसंगति के लिए उन्हें क्षमा नहीं किया तथा उनका परिष्कार किया जाना अनिवार्य माना। जब इतिहास जगत में इतिहास लेखन के नए आयाम तथा एतद्विषयक नये दृष्टिकोण मुखरित होकर सामने आने लगे तो प्रो. व्यास ने बाकायदा उनसे अपना सामंजस्य बनाया और उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। इतिहास लेखन विषयक नवीन रुझानों के संदर्भ में टिप्पणी करते हुए प्रो. व्यास ने सन् 1984 में राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के बीकानेर में सम्पन्न हुए चौदहवें अधिवेशन के अपने अध्यक्षीय भाषण में जो कुछ कहा उससे हमें उनकी इतिहास दृष्टि की एक झलक देखने को मिलती है। इस उद्बोधन में उन्होंने राजस्थान के सामाजिक और आर्थिक इतिहास के अध्ययन की आवश्यकता की जोरदार वकालत की थी। उन्होंने इतिहास की तुलना सत्य की खोज से की। उनका मानना था कि इतिहास एक ऐसा अनुशासन है, जिसे कभी पूर्ण नहीं कहा जा सकता चूंकि नये साक्ष्यों के प्रकाश में आने का सिलसिला हमेशा चलता रहता है और आने वाली पीढ़ियां अपने समय के प्रश्नों के जवाब इतिहास में ढूंढ़ने के लिए उन साक्ष्यों को

अपने-अपने ढंग से विवेचित और विश्लेषित करने का क्रम जारी रखती हैं। अपने उक्त अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. व्यास ने यह बात बड़े ही पुरजोर ढंग से उठाई थी कि राजा-महाराजाओं, मिनिस्टर्स तथा जनरल्स पर केन्द्रित राजस्थान के इतिहास लेखन की पुरानी एप्रोच का परित्याग कर क्षेत्रीय, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्षों के इतिहास लेखन पर जोर देना होगा। सामाजिक ताने-बाने के अध्ययन में यह सभी पक्ष अंतःसम्बन्धित हैं और परोक्ष-अपरोक्ष रूप से परस्पर जुड़े हुए हैं। अपनी उक्त बात को विस्तार प्रदान करते हुए उन्होंने यह कहा था कि इस प्रकार के अध्ययन वर्तमान में जरूरी हो गए हैं। उन्होंने जी.एन. शर्मा, कालूराम शर्मा तथा पेमाराम आदि इतिहासकारों के नाम उद्धृत करते हुए कहा कि इन इतिहासकारों ने अपने लेखन को राजवंशीय इतिहास लेखन के स्थान पर विविध कालखण्डों के राजस्थान के सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन पर केन्द्रित किया। उन्होंने प्रो. एस.पी.गुप्ता तथा दिलबाग सिंह सरीखे इतिहासज्ञों को मध्य तथा उत्तर मध्यकालीन पूर्वी राजस्थान की ग्राम्य अर्थव्यवस्था तथा ग्रामीण समाज विषयक उनके सांख्यिकीय अध्ययनों के लिए उद्धृत किया। इन अध्ययनों से काश्त; कृषि उत्पादन; भूराजस्व दर; मूल्यों के उतार-चढ़ाव; कृषक वर्ग की संरचना एवं संगठन; ग्राम्य समुदाय का स्तरीकरण एवं वैविध्य; कृषि समुदाय के विविध वर्गों से भूराजस्व माँग; कृषक-जागीरदार वर्ग के पारम्परिक सम्बन्ध; कृषक-शासक सम्बन्ध; कृषक ऋणग्रस्तता आदि विषयों पर प्रकाश पड़ा। कृषक समाज की एक ऐसी मिश्रित तस्वीर के इतिहास के चित्रण को उन्होंने आज के समय के इतिहास की एक महती आवश्यकता बताया।

'दी पीजेन्ट्स ऑफ मारवाड़ एण्ड दियर रिलेशन्स विद दि रूलर ओर दि जागीरदार ड्यूरिंग नाइन्टीन्थ सैन्चुरी' शीर्षक से लिखे अपने एक शोध पत्र में प्रो. व्यास ने शोषक एवं शोषित वर्ग के सम्बन्धों के संदर्भ में कृषक वर्ग द्वारा देय देनदारियों; मारवाड़ के कृषक समाज के एक वर्ग के रूप में चित्रण; जमीन के प्रकारों; वर्षानुपात; मुख्य फसलों; काश्त पद्धतियों; मुख्य कृषक जातियों जैसे जाट, कुम्भार, माली, बिश्नोई, काल्वी, गूजर आदि पर प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त काश्तकारों की श्रेणियों - बापीदार तथा गैर बापीदार; उनके अधिकारों-विशेषाधिकारों; लगान निर्धारण प्रकार; वस्तु या नगद रूप में अदा किए गए भूराजस्व; लाग-बाग; कृषक ऋणग्रस्तता; महाजनों तथा बोहरों की भूमिका तथा राज्य द्वारा किए गए सुधारों आदि पर भी प्रकाश डाला। इस शोधा-पत्र में प्रो. व्यास ने काश्तकारों की वेशभूषा, खान-पान, घर, रहन-सहन आदि को भी अपने लेखन का विषय बनाया। प्रो. व्यास ने व्यापार एवं वाणिज्य के

विकास की महत्ता को भी रेखांकित किया। उन्होंने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लेखन योगदान करने के लिए प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा, जी.डी. शर्मा, एच.सी. टिक्कीवाल, बी.एल.भादाणी तथा स्वयं के द्वारा पूर्ण किए गए रिसर्च प्रोजेक्ट **'ट्रेड, ट्रेड रूट्स एण्ड कॉमर्स ऑफ वैस्टर्न राजस्थान ड्यूरिंग दि एटीन्थ एण्ड नाइन्टीन्थ सैन्चुरीज'** को उद्धृत किया। यहाँ हम इस विषय से सम्बन्धित उनके कतिपय अन्य महत्त्वपूर्ण शोध-पत्रों को भी उद्धृत कर सकते हैं जो निम्नांकित शीर्षकों से थे - **'ट्रेड सेन्टर्स ऑफ मारवाड़ एण्ड लिंक्ड ट्रेड रूट्स ड्यूरिंग एटीन्थ सैन्चुरी ए.डी.'**; **'कॉमर्स इन सिरोही (1820-1920 ए.डी.)'** तथा **'पाली-एन एम्पोरियम ऑफ राजपूताना'**।[22] इन शोध पत्रों में से अंतिम शीर्षक के शोध पत्र में प्रो. व्यास ने पाली को मारवाड़ का एक प्रमुख वाणिज्य-केन्द्र प्रमाणित करते हुए यह लिखा था कि थल मार्गो से यह गुजरात, उत्तर प्रदेश के बड़े व्यापारिक नगरों से जुड़ा हुआ था। पाली उस मार्ग पर स्थित था जिससे होकर मालवा की अफीम का निर्यात चीन तथा पश्चिमी एशिया को हुआ करता था। यह एक प्रकार से तत्कालीन सम्पूर्ण राजपूताना का संग्रहण और वितरण केन्द्र था। पाली के अतिरिक्त उन्होंने नागौर, जोधपुर, मेड़ता आदि को भी मारवाड़ के अन्य व्यापार केन्द्रों के रूप में उद्धृत किया। प्रो. व्यास ने लिखा था कि मारवाड़ के शासकों ने व्यापारियों को सदैव प्रोत्साहन व संरक्षण प्रदान किया तथा उन्हें कई प्रकार की रियासतें भी प्रदान की। प्रो. व्यास इस तथ्य से भी भलीभांति परिचित थे कि राजस्थान के इतिहासकारों द्वारा आदिवासियों से सम्बन्धित इतिहास लेखन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया था। उन्होंने राजस्थान के नगरीय इतिहास के अध्ययन की आवश्यकता पर भी जोर दिया जो अभी तक इतिहासकारों द्वारा उपेक्षित रहा था। तत्सम्बन्धी विविध आयामों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया जाना, उन्होंने समय की एक महती आवश्यकता माना। उन्होंने राजस्थान के ऐतिहासिक पुरातत्व पर भी समुचित काम किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उन्होंने संकेत किया था कि राजस्थान में मंदिर पुरातत्व से जुड़े अध ययनों की विपुल सम्भावनाएं हैं। उनका मानना था कि, पुरातात्विक साक्ष्यों को साहित्यिक स्रोतों में प्राप्य विवरण से जोड़ कर देखने पर कई पूर्व स्थापित भ्रान्त धारणाओं और मान्यताओं का निराकरण या परिमार्जन सम्भव है। प्रो. व्यास का यह मानना था कि राजस्थान के इतिहास पर काम करते समय राजस्थान के इतिहासकारों और शोधार्थियों को यह ध्यान रखना होगा कि उनके निष्कर्ष तथा मान्यताएं अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले शोधार्थियों की मान्यताओं व निष्कर्षो से सामंजस्य व समन्वय स्थापित कर सकें तभी हम राष्ट्रीय स्तर पर एक समग्र और

वृहत्त राष्ट्रीय इतिहास लेखन की दिशा में अग्रसर हो सकेंगे। उन्होंने क्षेत्रीय इतिहास को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जोड़ने को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया और यही उनके इतिहास दर्शन का केन्द्र बिन्दु भी था। राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति की लेखन यात्रा में प्रो. आर.पी. व्यास का अवदान एवं योगदान अपना एक असमानांतर महत्त्व रखता है। उनके द्वारा प्रणीत सभी शोधापूर्ण ऐतिहासिक कृतियां राजस्थान इतिहास जगत के लिए मार्ग प्रशस्तक एवं शोधा की नवीन सम्भावनाओं का मार्ग प्रशस्त करने वाली रही हैं परन्तु उनकी शोध कृति, **'रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800-1873 ए.डी.)'** को उनके एक 'पायोनियर-वर्क' के रूप में विशेष रूप से रेखांकित किया जाए तो रंच मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक पूर्वाग्रह रहित, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चिंतक, गवेषक दृष्टियुक्त विश्लेषक इतिहासज्ञ के रूप में राजस्थान के इतिहास को रहे उनके अतुलनीय योगदान के लिए इस महान विभूति को कोटिशः नमन है।

संदर्भ :

1. प्रो. आर.पी. व्यास के निर्देशनाधीन सम्पन्न पी-एच.डी. शोध कार्यो हेतु द्रष्टव्य - डॉ. हंसराज बेनीवाल - हिस्ट्री ऑफ राठौड्स; डॉ. मांगीलाल मयंक - हिस्ट्री ऑफ मारवाड़ फ्रॉम राव सीहा टू राव मालदेव; डॉ. प्रकाश व्यास - नोबिलिटी ऑफ मेवाड़; डॉ. शिवदत्त दान - महाराजा विजयसिंह एण्ड हिज टाइम्स; डॉ. विद्या शर्मा - एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ दि स्टेट ऑफ अलवर; डॉ. तारा मंगल - महाराणा कुम्भा एण्ड हिज टाइम्स (जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी. प्रदत्त उपर्युक्त समस्त ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।)
2. रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800-1873 ए.डी.), दिल्ली, 1969; महाराणा राज सिंह ऑफ मेवाड़, 1984; आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास (1707-1818 ए.डी.), खण्ड-I, जयपुर, 1986; राजस्थान रा इतिहास रतन - इन्दरराज सिंघवी, जोधपुर, 1994; आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास (1818-1950 ए.डी.), खण्ड-II, जयपुर, 1995; राजस्थान के लोक नायक जयनारायण व्यास, जोधपुर, 1998; महाराणा प्रताप, जयपुर, 2000; समाज रत्न हरविलास सारदा, परम्परा विशेषांक, जोधपुर; मारवाड़ के अभिलेख - दो खण्ड।
3. इतिहास प्रदीप, जयपुर; भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर; विश्व का इतिहास, जयपुर; भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयपुर।
4. राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स, प्रोसीडिंग्स एवं मैग्जीन्स में प्रकाशित उनके चुनिन्दा चर्चित एवं महत्त्वपूर्ण शोध-पत्र/आर्टीकल्स आदि - ओरिजिन एण्ड ग्रेजुएशन ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (पी.आर.एच.सी. सैशन-I), पेज 36, जोधपुर, 1967; महाराजा मान सिंह एण्ड हिज एण्टी ब्रिटिश फीलिंग्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 30वां सैशन, भागलपुर, 1968; दि रोल ऑफ ठाकुर

सवाई सिंह ऑफ पोकरण इन दि पोलिटिक्स ऑफ मारवाड़, जर्नल ऑफ राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, जयपुर, पार्ट-6, मार्च, 1969; अमेरिका एण्ड दि कोलोग ब्रीयांड पैक्ट - पब्लिश्ड इन अमेरिकन गवर्नमेंट एण्ड पोलिटिक्स, 1970, पृ. 256, दि पेपर वाज प्रेजेन्टेड इन ए सेमीनार एट माउण्ट आबू; मारवाड़ इन 1857 - जोधपुर यूनिवर्सिटी मैग्जीन, 1970; दि क्राइसिस इन मारवाड़ इन 1828, प्रोसीडिंग्स ऑफ राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, पी.आर.एच.सी., अजमेर सैशन, 1972, पृ. 103; दि प्रोपोज्ड मारवाड़ पीपुल्स कॉन्फ्रेन्स, अक्टूबर, 1929, पी. आर.एच.सी. सैशन-6, पृ. 111, ब्यावर, 1973; डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स - जोधपुर डिस्ट्रिक्ट, 1973, चैप्टर-II ऑन हिस्ट्री ऑफ अबाउट 100 टाइप्ड पेजेस; बनेड़ा पेपर्स बाय डॉ. के.एस. गुप्ता - रिवाईज्ड इन दि क्वार्टरली जर्नल ऑफ दि इंस्टीट्यूशन ऑफ दि हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता; एण्टी-ब्रिटिश फीलिंग अमंग दि पीपुल ऑफ राजस्थान 1818-1857 ए.डी. एन अप्रैजल ऑफ कन्टेम्परेरी बार्डिक लिटरेचर, दि क्वार्टरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज 1974-75, वोल्यूम XIV नं. 4, पृ. 203, कलकत्ता; दि वाल्टरकृत राजपूताना हितकारिणी सभा एण्ड इट्स इम्पैक्ट, पी.आर.एच.सी. सैशन 8, पृ. 103, अजमेर, 1975; दि वाल्टरकृत राजपूताना हितकारिणी सभा एण्ड इट्स इम्पैक्ट, ऑल इण्डिया हिस्ट्री कांग्रेस, 38 सैशन, अलीगढ़, 1975; अग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान बाय डॉ. राम पाण्डे - रिव्यूड इन दि क्वार्टरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता, वो. नं. XV, 1975-76, नं. 2, पृ. 129; बार्डिक लिटरेचर एज ए सोर्स ऑफ हिस्ट्री - ए पेपर प्रेजेन्टेड एट दि इलैवन्थ सैशन कोल्हापुर इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, 1975-76, पब्लिश्ड; अमरकोट - ए पार्ट ऑफ दि राठौड़ स्टेट ऑफ जोधपुर - ए केस फॉर दि गवर्नमेंट, पी.आर.एच.सी. कोटा सैशन 9, पृ. 113, 1976; पोलिटीकल कण्डीशन ऑन दि ईव ऑफ दि असैशन ऑफ महाराणा प्रताप, पृ. 87, बैटल ऑफ हल्दीघाटी सेन्टेनरी सैलिब्रेशन, 1976; जोधपुर इन ए हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव (पब्लिश्ड इन सेवरल सोवेनीर्स एण्ड जर्नल्स); सोशल लाईफ ऑफ दि चारण कम्यूनिटी विज-ए-विज दि राजपूत्स इन दि मेडिवल पीरियड - पेपर एक्सेप्टेड फॉर दि 39जी सैशन ऑफ दि इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस हेल्ड एट ओस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद, 1978; दि पोजीशन ऑफ चारन्स इन दि सोशल लाईफ ऑफ दि राजपूत्स एण्ड अदर पीपुल, पी.आर. एच.सी. सैशन 11, पृ. 84, जयपुर, 1978; सोशल एण्ड रिलीजियस रिफोर्म मूवमेंट्स इन दि नाइन्टीन्थ एण्ड ट्वेन्टीएथ सैन्चुरीज इन वैस्टर्न राजस्थान पब्लिश्ड इन ए बुक 'सोशल एण्ड रिलीजियस रिफोर्म मूवमेंट इन दि 19 एण्ड 20 सैन्चुरीज' एडीटेड बाय डॉ. एस.पी. सेन इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता, 1979, पृ. 177; हिस्टोरिकल बायोग्राफी इन इण्डियन लिटरेचर, एडिटेड बाय डॉ. एस.पी. सेन इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, 1979, बायोग्राफिकल स्केचेज इन राजस्थानी लिटरेचर, पृ. 179; सोर्सेज ऑफ दि हिस्ट्री ऑफ एनशिएण्ट राजस्थान, पृ. 3, पब्लिश्ड इन सोर्सेज ऑफ दि हिस्ट्री ऑफ

इण्डिया, वोल्यूम II, एडिटेड बाय डॉ. एस.पी. सेन, इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, 1979; पीपुल्स मूवमेंट इन राजस्थान, पब्लिश्ड इन राजस्थान विधान सभा रजत जयंती ग्रंथ, 1952-77, पृ. 185, 1979; पाली - एन एम्पोरियम ऑफ राजपूताना, दि क्वार्टरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता, वोल्यूम नं. XVIII, 1978-79, नं. 3, पृ. 184; बांकीदास एज ए हिस्टोरियन - पेपर प्रेजेन्टेड एट दि सेमीनार एनटाईटल्ड हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स ऑफ राजस्थान हेल्ड एट जयपुर (18 एण्ड 19 फरवरी, 1978) पब्लिश्ड; राजस्थानी एण्ड इट्स कंट्रीब्यूशन इन दि राईज ऑफ नेशनलिज्म ड्यूरिंग 19 सैन्चुरी - पेपर प्रेजेन्टेड एट दि कॉन्फ्रेन्स हेल्ड एट मदुरई, 1978 (इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता); सोर्सेज ऑफ फ्यूडलिज्म इन राजस्थान इन दि 19 सैन्चुरी - ए पेपर प्रेजेन्टेड एट दि सेमीनार हेल्ड एट जयपुर अण्डर दि आस्पिसेस ऑफ दि सेन्टर फॉर राजस्थान स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, जयपुर, 1978-79; फ्यूडल स्ट्रक्चर ऑफ मारवाड़ - हिस्टोरिकल स्टडीज - पब्लिश्ड बाय शोध संस्थान, चौपासनी, 1979; स्टडीज इन मेडिवल राजस्थान हिस्ट्री बाय डॉ. मंजीत सिंह अहलूवालिया - ए रिव्यू पब्लिश्ड इन दि क्वार्टरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, वोल्यूम XIX, 1979-80, नं. 1-2; राजस्थानी लिटरेचर एज ए सोर्स ऑफ हिस्ट्री, 1979 पब्लिश्ड इन परम्परा; राजस्थानी एण्ड इट्स कन्ट्रीब्यूशन इन दि राईज ऑफ नेशनलिज्म ड्यूरिंग दि 19 सैन्चुरी, पृ. 25, शोध साधना, सीतामऊ; दि रोल ऑफ महाराजा गंगा सिंह इन दि फोर्मेशन एण्ड स्टेबीलाईजेशन ऑफ दि चैम्बर ऑफ प्रिंसेज, पृ. 8, महाराजा गंगासिंह सैन्टेनरी वोल्यूम, बीकानेर, 1980; ए स्टडी ऑफ दि सोशल इविल्स इन राजस्थान इन दि 19जी सैन्चुरी एण्ड दि ब्रिटिश इम्पैक्ट - पेपर प्रेजेन्टेड एट दि सेमीनार हेल्ड अण्डर दि आस्पिसेज ऑफ उदयपुर यूनिवर्सिटी, 1980; चेन्जिग पोलिटीकल सीन्स इन मारवाड़ ड्यूरिंग 19 सैन्चुरी, पेपर प्रेजेन्टेड एट दि सेमीनार हेल्ड इन बड़ौदा अण्डर दि आस्पिसेज ऑफ एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, 1980; पब्लिक वर्क्स ऑफ महाराणा राजसिंह - थ्री हण्ड्रेड्थ डैथ एनीवर्सरी ऑफ महाराणा राज सिंह वोल्यूम, 1980; राजस्थान गजेटियर, चैप्टर-II, सैक्शन ए, सोर्सेज ऑफ हिस्ट्री ऑफ राजस्थान फ्रॉम अर्लिएस्ट टाईम्स टू 700 ए.डी., 1981, पब्लिश्ड इन गजेटियर्स; एडमिनिस्ट्रेटिव एण्ड पोलिटीकल डवलपमेंट्स इन दि प्रिंसली स्टेट ऑफ राजस्थान, पेपर प्रेजेन्टेड एट दि कॉन्फ्रेन्स ऑफ दि इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता, पब्लिश्ड इन 1981; ब्रिटिश डिप्लोमेसी टूवर्ड्स मारवाड़ ड्यूरिंग दि रेन ऑफ महाराजा मान सिंह - ए पेपर प्रेजेन्टेड इन दि सेमीनार ऑर्गेनाईज्ड बाय दि डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री, यूनिवर्सिटी ऑफ जोधपुर अण्डर दि यू.जी.सी. स्पेशल असिस्टेन्स प्रोग्राम (दिस., 5-7, 1981); ट्रेड एण्ड कॉमर्स इन सिरोही (1820-1920), ए पेपर प्रेजेन्टेड इन ए सिम्पोजियम हेल्ड एट सिरोही एट दि टाईम ऑफ दि 13 सैशन ऑफ दि आर.एच.सी.; कर्मयोगी डॉ. भीमराव अम्बेडकर, पेपर प्रेजेन्टेड इन दि सेमीनार ऑर्गनाईज्ड बाय जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी, जोधपुर; पब्लिश्ड इन दि बुक प्रिंटेड बाय दि यूनिवर्सिटी; महाराजा अजीत सिंह के पालनकर्ता - जयदेव, पब्लिश्ड इन पी.आर.एच.सी.; फ्रीडम स्ट्रगल इन मारवाड़ - एन अर्ली फेज (1921-1931 ए.डी.) पब्लिश्ड इन दि जर्नल।

5. गजेटियर ऑफ इण्डिया, राजस्थान, जोधपुर डिस्ट्रिक्ट, चैप्टर-II, हिस्ट्री - अर्ली हिस्ट्री, मिडीवल पीरियड, राठौड्स, मोडर्न पीरियड - पोलिटीकल अनरैस्ट (पृ. 13-66); चैप्टर-II सैक्शन (ए) एण्ड (बी) फॉर राजस्थान गजेटियर डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, जयपुर; इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता द्वारा सम्पादित प्रोजेक्ट 'डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी' का प्रकाशन कई खण्डों में हुआ जिनमें प्रो. व्यास ने निम्नांकित व्यक्तित्वों पर लेखन किया - जी. डी. बिरला, दामोदर सेठी, मथुरादास माथुर, राम निवास, डॉ. पी.के. सेठी, डॉ. कासलीवाल, डॉ. सीताराम लालस, श्री अचलेश्वर प्रसाद, डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी।
6. जर्नल ऑफ दि इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता तथा कई अन्य जर्नल्स में प्रो. व्यास के कई बुक-रिव्यूज प्रकाशित हुए। द्रष्टव्य - डॉ. महेन्द्र सिंह नगर कृत मारवाड़ के राजपरिवार की सांस्कृतिक परम्परा (दो खण्डों में), विषयक रिव्यू।
7. प्रो. व्यास ने कई पुस्तकों/ग्रंथों के फॉरवर्ड तथा प्राक्कथन लिखे और अध्याय लेखन में योगदान दिया। द्रष्टव्य - राजस्थान स्वर्ण जयन्ती समिति, जयपुर द्वारा प्रकाशित ग्रंथ "राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा" में लिखे अध्याय - मथुरा दास माथुर, द्वारका दास पुरोहित; स्व. डॉ. मांगीलाल मयंक कृत 'जैसलमेर का इतिहास', के अंतिम तीन अध्याय।
8. राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस (14वां अधिवेशन), बीकानेर, 1984 में दिया अध्यक्षीय उद्बोधन; शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर में 'हर विलास सारदा' पर दिया विस्तार व्याख्यान जिसे 'परम्परा' के 125 पृष्ठीय विशेषांक में प्रकाशित भी किया गया; 'महाराणा संग्राम सिंह' पर ग्वालियर में दिया 'जीवाजी राव सिन्धिया मेमोरियल लैक्चर'; जोधपुर में समायोजित राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस में दिया गया 'जगदीश सिंह मेमोरियल लैक्चर'; राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के चित्तौड़ अधिवेशन में 'फ्रीडम स्ट्रगल इन राजस्थान' पर दिया गया विस्तार-व्याख्यान; प्रो. नाथूराम खड़गावत मेमोरियल लैक्चर, बीकानेर, 1984 में प्रो. सतीश चन्द्र, पूर्व यू.जी.सी. चेयरमैन के सम्भाषण के अवसर पर दिया अध्यक्षीय उद्बोधन; प्रो. नाथूराम खड़गावत मेमोरियल लैक्चर, बीकानेर, 1985 में प्रो. द्विजेन्द्र त्रिपाठी के व्याख्यान के अवसर पर दिया गया अध्यक्षीय उद्बोधन; इतिहास विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में दिए गए दस व्याख्यान; पूर्ववर्ती जोधपुर वि.वि. में दिए गए विस्तार व्याख्यान तथा राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के 25वें सिल्वर जुबली सेशन (जोधपुर, 2009) में दिया गया अध्यक्षीय उदबोधन विशेष रूप से उल्लेख योग्य हैं।
9. सेवानिवृत होने के उपरान्त प्रो. व्यास ने भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के एक रिसर्च प्रोजेक्ट 'ट्रेड रूट्स एण्ड कॉमर्शियल सेन्टर्स इन राजस्थान'

पर एवं तदनन्तर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त एक त्रिवर्षीय वृहत शोध परियोजना पर कार्य किया।

10. कतिपय प्रमुख एवं उद्धृत किए जाने योग्य सेमीनार/कांग्रेस निम्नांकित थीं – ऑल इण्डियन कांग्रेस के वल्लभनगर, पटियाला, भागलपुर एवं अलीगढ़ सत्र; अमेरिकन हिस्ट्री कांग्रेस के अलाहाबाद एवं भागलपुर सत्र; रीजनल सेमीनार ऑन मेजर इश्यूज इन अमेरिकन गवर्नमेंट एण्ड पोलिटिक्स इन दि ट्वन्टीयथ सैन्चुरी, माउण्ट आबू; राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के समस्त अधिवेशन (बीकानेर में हुए 23वें तथा सुजानगढ़ में हुए 24वें अधिवेशन को छोड़ कर); इण्डियन हिस्टोरिकल रिकार्ड कमीशन का पणजी (गोआ) अधिवेशन (1973), दिल्ली अधिवेशन (1981) एवं अहमदाबाद अधिवेशन (1983); इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता के जोधपुर, कुरूक्षेत्र, कोल्हापुर, मदुरई तथा नागपुर अधिवेशन; सेन्टर फॉर राजस्थान स्टडीज, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा अस्सी के दशक में समायोजित समस्त सेमीनार्स; सेमीनार ऑन सोश्यो–इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ राजस्थान एण्ड मध्य प्रदेश ड्यूरिंग मिडीवल एण्ड मॉडर्न पीरियड एट यूनिवर्सिटी ऑफ उदयपुर, ऑर्गेनाईज्ड बाई आई.सी.एच.आर., न्यू दिल्ली (1979); सेमीनार ऑन गुजरात राजस्थान एण्ड मालवा इन दि सेवन्टीन्थ, ऐटीन्थ एण्ड नाइन्टीन्थ सैन्चुरीज 'प्रॉब्लम्स एण्ड प्रोस्पेक्टिव इन सोशल, इकोनोमिक एण्ड पोलिटीकल हिस्ट्री', एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा (1979); सेमीनार ऑन 'प्रॉब्लम्स ऑफ यूथ एण्ड यूथ वेलफेयर', श्रीनगर यूनिवर्सिटी, काश्मीर, 1978; जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर तथा मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर द्वारा समायोजित विविध राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार्स; इनके अतिरिक्त प्रो. व्यास ने कतिपय सेमीनार्स को ऑर्गेनाईज भी किया जिनमें से प्रमुख थे – यू.जी.सी. स्पॉन्सर्ड सेमीनार ऑन "ब्रिटिश पॉलिसीज टूवर्ड्स दी प्रिन्सली स्टेट्स ऑफ राजस्थान एण्ड इट्स नेबर्स", इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर (1981); आई.सी.एच.आर. स्पॉन्सर्ड सेमीनार ऑन 'हिस्ट्री ऑफ राजस्थान (700–1200 ए.डी.)', इतिहास विभाग, जे.एन.व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

11. द्रष्टव्य – दुर्गादास गोल्ड मैडल फॉर मेरीटोरियस सर्विस रेन्डर्ड इन दि फील्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ राजस्थान एण्ड एज्यूकेशन, 1983; महाराणा कुम्भा अवार्ड बाई महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन फॉर बेस्ट सर्विस रेन्डर्ड इन दि फील्ड ऑफ हिस्ट्री, लिटरैचर एण्ड कल्चर ऑफ राजस्थान, 1985; ऑनर्ड बाई जगदीश सिंह गहलोत रिसर्च सेंटर फॉर वैल्युएबल सर्विसेज रेन्डर्ड इन दि स्फीयर ऑफ एज्यूकेशन एण्ड हिस्ट्री, 1994; राजस्थान हिन्दी ग्रंथ एकेडेमी ऑनर्ड फॉर राइटिंग बुक्स ऑन हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ राजस्थान; ऑनर्ड बाई मरूभूमि शोध संस्थान, श्रीडूंगरगढ़, चूरू फॉर रिसर्च वर्क एण्ड ऑनर्ड बाई दि टाईटल 'इतिहास श्री'; जोधपुर रॉयल हाउस (पूर्व महाराजा गजसिंह जी) कन्फर्ड 'पालकी सिरोपाव' इन दि ईयर 2000; इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर कैम्ब्रिज, इंग्लैण्ड नोमीनेटेड हिम 'एन इंटरनेशनल मैन ऑफ दि ईयर फॉर 1997–98'; डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर, जोधपुर ऑनर्ड फॉर डूइंग वैल्युएबल सर्विसेज टू दि सोसाइटी; सन्त सत्यमित्रानंद जी गिरि ऑनर्ड हिम फॉर वैल्युएबल सर्विसेज रेन्डर्ड टू दि सोसाइटी; नागरिक अभिनंदन बाई दि सिटीजन्स ऑफ जोधपुर ऑन 12.8.98; अभिनंदन ग्रंथ पब्लिश्ड ऑन 12 अगस्त, 1998 एण्ड ऑनर्ड बाई कैश अवार्ड ऑफ रु. 51000/–; 'मारवाड़ रत्न' फॉर लाइफ टाईम अचीवमेंट बाई मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर, 2011; भारत ज्योति अवार्ड, इण्डियन फ्रैन्डशिप सोसाइटी, न्यू दिल्ली, 2013।

12. आर.पी. व्यास : रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़ (1800–1873 ए.डी.), जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली, 1969।
13. आर.पी. व्यास : समाज रत्न हरविलास सारदा, परम्परा विशेषांक (125 पृष्ठ), शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
14. आर.पी. व्यास : राजस्थान रा इतिहास रतन – इन्दर राज सिंघवी, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर, 1994।
15. आर.पी. व्यास : राजस्थान के लोक नायक जयनारायण व्यास, राजस्थान साहित्य संस्थान, जोधपुर, 1998।
16. आर.पी. व्यास : महाराणा प्रताप, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2000 ए.डी.।
17. राजस्थान स्वर्ण जयंती समिति जयपुर द्वारा प्रकाशित ग्रंथ "राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा" के अंतर्गत प्रकाशित।
18. मांगीलाल व्यास 'मयंक' : हिस्ट्री ऑफ जैसलमेर।
19. आर.पी. व्यास (संपादित) : ब्रिटिश पॉलिसी टूवर्ड्स प्रिन्सली स्टेट्स ऑफ इण्डिया (सेमीनार प्रोसीडिंग्स), जोधपुर, 1981।
20. राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति विषयक संस्थात्मक अध्ययन की दृष्टि से द्रष्टव्य – प्रो. शिव कुमार भनोत : राजस्थान में पंचायत व्यवस्था, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर, 2000।
21. द्रष्टव्य – वी.एन.रेउ : ग्लोरीज ऑफ मारवाड़ एण्ड दी ग्लोरियस राठौड्स, हिस्ट्री ऑफ दी राष्ट्रकूट्स (वोल्यूम–I), मारवाड़ का इतिहास (दो भागों में); जे.सी. गहलोत : राजपूताना का इतिहास (वोल्यूम I एवं II); जी.एच.ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास; आर.के.आसोपा : मारवाड़ का मूल इतिहास।
22. पाली – एन एम्पोरियम ऑफ राजपूताना, दी क्वार्टरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कलकत्ता, वोल्यूम नं. XVIII, 1978–79, नं. 3, पृ. 184।

प्रोफेसर आर.पी. व्यास स्मृति व्याख्यान

इतिहासकार प्रो. आर.पी. व्यास एवं उनका इतिहास-लेखन

प्रो. शिव कुमार भनोत
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास)
तथा डीन (समाज विज्ञान संकाय)
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर-334004 (राज.)
email : skbhanot55@gmail.com

मंगलवार
दिसम्बर 15, 2015

राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस 30वां अधिवेशन
इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
email : rajhisco@gmail.com website : www.rajhisco.webs.com

मुद्रक :
जांगिड़ कम्प्यूटर्स, जोधपुर 9414308049

मूल्य : 75 रुपये